किशोरावस्था
Adolescence
लैटिन शब्द → Adolescere → एडोलिसयर
↳ परिपक्वता की ओर बढ़ना
to Grow or to grow to maturity.

किशोरावस्था (Adolescence)

किशोरावस्था जो अंग्रेजी के Adolescence शब्द का हिन्दी रूपांतरण है। जो लैटिन शब्द के एडोलिसयर (Adolescere) से निकला है। जिसका शाब्दिक अर्थ है (परिपक्वता की ओर बढ़ना) to Grow or to grow to maturity)

किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति बाल्यावस्था के बाद पदार्पण करता है। इस अवस्था का प्रसार 11-13 वर्ष से 21 वर्ष तक होता है। किशोरावस्था के प्रारम्भिक वर्षों में विकास की गति अत्यधिक तीव्र होती है।

प्राचीन समय में यौवनारम्भ एवं किशोरावस्था को एक ही माना जाता रहा है तथा सन्तानोत्पत्ति की क्षमता ग्रहण कर लेने के पश्चात् किशोरों को प्रौढ़ की संज्ञा दे दी जाती थी। परन्तु आज उसका क्षेत्र व्यापक हो गया है तथा इसमें केवल शारीरिक परिपक्वता ही नहीं बल्कि मानसिक, सामाजिक, संवेगिक परिपक्वता की विशेषताएं संयुक्त रूप से होती है।

किशोरावस्था अत्यंत संक्रमणकाल की अवधि होती है। इस अवस्था में किशोर स्वयं को बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य अनुभव करता है। जिस कारण वह न तो बालक और न ही प्रौढ़ की तरह व्यवहार कर पाता है फलत: वह अपने व्यवहार को निश्चित करने में कठिनाई का अनुभव करता है। किशोरावस्था में अनेक प्रकार के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं व्यवहारिक परिवर्तन एवं विकास दिखाई देते हैं। इन परिवर्तनों के कारण उनकी रुचियों, इच्छाओं आदि भी परिवर्तित हो जाती है। इन्हीं सब कारणों किशोरावस्था का जीवन के विकास कालों में काफी महत्व है।

किशोरावस्था के अन्तर्गत लड़कियों में यौवनारम्भ (Puberty, 12-15) वर्ष के बीच आता है जबकि लड़कों में यह 2-3 वर्ष यानी 14-16 वर्ष में शुरू होता है। किशोरावस्था परिवर्तन की अवस्था भी मानी जाती है क्योंकि इस अवस्था में दैहिक परिवर्तन के साथ-साथ रुचियों, संवेगों एवं व्यवहारों में भी परिवर्तन दिखायी पड़ता है।

आमतौर से यौवनारम्भ से लेकर परिपक्वता की स्थिति तक पहुँचने की दशा को किशोरावस्था की संज्ञा दी जा सकती है। इसके तहत उत्पत्तियाँ परिपक्वता अर्जित करने लग जाती है तथा व्यक्ति की शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, संवेगिक, मनोलैंगिक, धार्मिक एवं नैतिक परिपक्वता उभरने लगती है।

स्वर्णिम काल की अवस्था

परिभाषा

Jarsield →
जरशिल्ड के अनुसार → किशोरावस्था वह समय है जिसमे विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर संक्रमण करता है।
Adolescence is a period through which a growing person makes transition from childhood to maturity.

स्टेनलेहॉल → किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तूफान, तनाव एवं विरोध (oppose (अपोज)) की अवस्था है। Adolescence is a period of great struggle, storm & tension

कुल्हन → बाल्यावस्था एवं प्रौढावस्था के मध्य के संधि काल किशोरावस्था कहलाता है। The transitional period between childhood & Adulthood is called adolescence

हरलॉक → किशोरावस्था लगभग 13 से 16 वर्ष के बीच प्रारम्भ होती है तथा 17 से 21 वर्ष तक रहती है।
Adolescence is begins around 13-16 years and lasts from 17-21 year

शिक्षाशास्त्रीयों के द्वारा (किशोरावस्था को दोनों में बाटा गया है।

1. 13-16 वर्ष — पूर्व किशोरावस्था
2. 17-21 वर्ष — उत्तर किशोरावस्था

किशोरावस्था के लक्षण Symptoms of Adolescence

1. शारीरिक परिवर्तन तीव्र गति से होता है। Very (Rapid) Physical change
2. अस्थिकरण (ossification) की प्रक्रिया पूरी हो जाती है। Completion of ossification
3. अमूर्त चेतन की योग्यता आ जाती है। Coming to the ability of abstract Consciousness
4. तर्क एवं वाद-विवाद की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। to generate the ability of logic and debate
5. संवेगों में तीव्र परिवर्तन किशोरावस्था की प्रमुख पहचान होती है। Rapid changes in emotions are the main identification of Adolescence.
6. विरोधी मनोदशाएँ (opposing moods) 7. भावना प्रधान जीवन (Emotional life) 8. वीर पूजा की भावना (The Spirit of hero worship)
9. मित्रों की अधिक संख्या (Large number of friends) 10. समूहों का निर्माण (group creation) 11. समूह में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने की चाह (Desire to have a special place in the group.)
12. मनपसन्द व्यवसाय को चुनना (Choose the best position of choice) 13. समूह के प्रति भक्ति कि भावना। (sense of devotion to group.)

काम शक्ति की परिपक्वता, अक्रियाशीलता

किशोरावस्था की अवधियाँ (Periods of Adolescence)

~~पूर्व किशोरावस्था~~ किशोरावस्था का वर्गीकरण	लड़के	लड़कियाँ
पूर्व किशोरावस्था	11-13	10-11
मूल / प्रारम्भिक किशोरावस्था	13-17	12-16
उत्तर किशोरावस्था	18-21	17-21

(1) पूर्व किशोरावस्था (Pre-adolescence) → विकास की यह अवस्था किशोरावस्था का आरम्भिक चरण है। पूर्व किशोरावस्था के इस चरण में शारीरिक विकास अचानक एवं झलकता है। यह परिवर्तन भिन्न किशोरों में भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। इस अवधि का विस्तार 10-13 वर्ष का होता है। लड़कियों में यह 10-11 वर्ष तथा लड़कों में यह 11-13 वर्ष का होता है। बुहलर ने इसे निषेधात्मक अवस्था का नाम दिया है क्योंकि इस अवधि में निषेधात्मक अभिवृत्तियों में अधिकता पायी जाती है। इसी अवधि में बालक के लैंगिक जीवन में तीव्र दैहिक विकास देखने को मिलता है। ऑगलाइव-(1952) ने पूर्व किशोरावस्था को रहस्यात्मक या गुप्त वर्ष कहा है। क्योंकि इस अवस्था में मित्र मण्डली का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। मित्रमण्डली अपने कार्यों को बड़ों से छिपाकर रखना चाहते हैं। इस अवस्था में किशोर तथा किशोरियों के व्यवहारों को समझने में कठिनाई होती है। इसलिए इसे रहस्यात्मक अवस्था कहा जाता है।

(2) प्रारम्भिक किशोरावस्था -(Early adolescence) - किशोरावस्था का यह चरण शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक क्षमताओं के विकास को दर्शाता है। इस अवधि का प्रसार 13-17 वर्ष तक लड़कों में लड़कियों में 12-16 वर्ष का होता है। इस अवस्था में बालक हाईस्कूल जाने की आयु ग्रहण कर लेता है। इसे अनुपयुक्त अवस्था (Awkward age) कहते हैं क्योंकि इस समय बालकों एवं बालिकाओं में अनाड़ीपन, भद्दीगी आदि प्रदर्शित होती है। इसी अवधि में मानसिक एवं शारीरिक विकास अपनी चरम सीमा पर होती है। इस अवस्था को भयानक किशोरावस्था भी कहा जाता है। बहुत से माता-पिता इस अवस्था से भयभीत पाये जाते हैं कि इस अवस्था में अनेक समस्यायें बालकों के सामने आने वाली है तथा वह उसके साथ कैसे समायोजन करेगा। इस ~~अवस्था~~ अवस्था में बच्चे के व्यवहार में असन्तुलन, अनुनमेय और अस्थिरता पाई जाती है। हरलाक (1976) के अनुसार यही नहीं किशोर बेढंगापन और अनियमित व्यवहार वाला हो जाता है।

(3) उत्तर किशोरावस्था (Late Adolescence) → किशोरावस्था के इस चरण में अप्रधान यौन लक्षण भली प्रकार से विकसित हो जाते है और यौन अंग प्रौढ़ कार्यकलाप में भी सक्षम हो जाते हैं। इस अवधि का विस्तार 17-21 वर्ष तक होता है। इस अवधि में किशोर अधिक फुर्तीला होता है तथा इसे आडम्बरी अवधि (ostentatious age) भी कहते है। इस अवस्था में किशोर तथा किशोरियों में सजावट, फैशनपरस्त, भड़कीलापन, तथा बाह्य आडम्बर देखने को मिलता है। वे एक-दूसरे को अपनी तरफ आकर्षित करना चाहते हैं। उनमें इतराना, इठलाना इतना ज्यादा होता है कि उनके हर ज्स्नोलाट के साथ-साथ ऊद न ऊद स्तारन भी प्रदर्शित होती है। इस अवधि में किशोरों की उत्कर

में किशोरियाँ अधिक फैशनपरस्त हो जाती हैं। इस अवधि में विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण देखा जाता है। कि इस अवस्था में परिपक्व जीवन व्यतीत करना ज्यादा पसन्द करते हैं तथा उनकी रुचियाँ बाल्यावस्था की रुचियों से भिन्न होती हैं। उत्तर किशोरावस्था में ही उन्हे मतदान करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। किशोर एवं कानूनी रूप से भी स्वयं को परिपक्व समझते हैं। जिम्मेदारी का निर्वाह करना तथा क्रान्तिकारी होना भी इस अवधि की विशेषताएं हैं। उत्तर किशोरावस्था पूर्ण परिपक्वतावस्था होने के साथ-साथ एक जुनहरी अवस्था भी होती हैं।

किशोरावस्था में शारीरिक विकास :→

मनुष्य के शारीरिक विकास से तात्पर्य उसके शारीरिक ढाँचे नाड़ी तन्त्र, हृदय तथा रक्त संचार तन्त्र, श्वसन तन्त्र, पाचन संस्थान, मांसपेशियों और अन्तःस्रावी ग्रंथियों में होने वाली वृद्धि और उसकी मनोशारीरिक क्रियाओं में होने वाले परिवर्तनों से होता है। मनुष्य का शारीरिक व्यवहार उसके मानसिक व्यवहार से प्रभावित होता है। सच बात यह है कि मनुष्य का शारीरिक एवं मानसिक व्यवहार एक दूसरे पर निर्भर करते हैं।

शारीरिक विकास के अन्तर्गत शरीर रचना, स्नायु मण्डल, मांसपेशीय वृद्धि अंतःस्रावी ग्रन्थियाँ आदि प्रमुख रूप से आती हैं। यही कारण है कि शैक्षिक दृष्टि से शारीरिक विकास को अत्यधिक महत्वपूर्ण स्वीकार किया जाता है। विकास की विभिन्न अवस्थाओं में शारीरिक विकास की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न होती हैं। किशोरावस्था में बालक एवं बालिकाओं के शरीर के भार, आकार लम्बाई आदि सभी में परिवर्तन दिखाई देता है। इन्ही परिवर्तनों के कारण बालक एवं बालिकाओं में शारीरिक परिपक्वता आती हैं। किशोरावस्था में शारीरिक विकास सम्बंधी होने वाले शारीरिक परिवर्तन निम्नांकित हैं।

भार → किशोरावस्था 13 वर्ष की अवस्था से प्रारम्भ होती हैं। 13 से 16 साल तक बालकों की अपेक्षा बालिकाओं का भा।

- जन्म के समय बालक को 7.15 पौंड भार जबकि बालिका में 7.13 पौंड भार पाया जाता है
- जब 6 वर्ष की अवस्था में यह भार बढ़कर 30 से 32 पौंड के लगभग हो जाता है। किशोरावस्था के प्रारम्भ में भार लगभग 90 पौंड के आसपास हो जाता है बालकों का भार किशोरावस्था में बालिकाओं की अपेक्षा लगभग 4 से 4.5 किलो अधिक होता है।

सिर एवं मस्तिष्क :→

- पुडवर्थ के अनुसार 15-20 वर्ष की आयु में बालक का अधिकतम या उच्चतम मानसिक विकास हो जाता है।
- लगभग 16 वर्ष की आयु तक सिर एवं मस्तिष्क का विकास पूर्ण हो जाता है। एक पूर्ण मस्तिष्क का भार 1200 – 1400 ग्राम के मध्य होता है।

मांसपेशीय – किशोरावस्था के दौरान माँस-पेशियों का भार कुल शरीर के भार का लगभग 45% हो जाता है।

हड्डियाँ – शैशवावस्था में – 270, बाल्यावस्था में – 350, किशोरावस्था में – २०६

लम्बाई – किशोरावस्था के दौरान बालक और बालिकाओं की लम्बाई में तीव्रगति से वृद्धि होती है। 12 वर्ष की अवस्था में बालक की ल० 138.3 cm और 18 वर्ष में लगभग 161.8 cm हो जाती है।

→ 12 वर्ष में बालिका की ल० लगभग 139.2 cm

→ 18 वर्ष में बालिका की ल० लगभग 151.6 cm

अस्थि-विकास → इस अवस्था में अस्थियों में नमनीयता नहीं रह जाती है। वे दृढ़ एवं पूरी तरह से मजबूत हो जाती हैं।

इन्द्रियों का विकास → इस अवस्था में बालक एवं बालिकाओं की ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों का पूर्ण विकास हो जाता है।

आवाज में परिवर्तन → इस अवस्था में बालक एवं बालिकाओं की गले की थायराइड ग्रंथि की सक्रियता के कारण बालकों की आवाज में भारीपन आ जाता है तथा बालिकाओं की आवाज में मधुरता व कोमलता आ जाती है।

लैंगिक ग्रंथि → उत्तर किशोरावस्था में लैंगिक ग्रन्थियों का आकार पूरा हो जाता है परन्तु कार्य के दृष्टिकोण से परिपक्वता कई वर्षों बाद आती है।

पाचन तंत्र → इस अवस्था में बालक के आंतरिक अंगों में भी परिवर्तन आ जाता है। जैसे-किशोरावस्था में बालक का आमाशय लम्बा हो जाता है। आंत की ल० तथा परिधि भी बढ़ जाती है तथा मांसपेशियाँ भी मोटी हो जाती है। यकृत का वजन कम बढ़ता है तथा श्वासनली लम्बी हो जाती है।

किशोरावस्था में मानसिक :- बौद्धिक एवं संज्ञानात्मक विकास :

इस अवस्था में किशोर-किशोरियों की बुद्धि का पूर्ण विकास हो जाता है, उनकी ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता बढ़ जाती है। स्मरण शक्ति बढ़ जाती है और उसमें स्थायित्व आने लगता है। साथ ही कल्पना, चिन्तन, तर्क, विश्लेषण, संश्लेषण और अमूर्त चिन्तन की शक्ति बढ़ जाती है और समस्या-समाधान की योग्यता का और अधिक विकास हो जाता है। इस आयु में बच्चों में मूर्त सम्प्रत्ययों (Concrete concepts) के साथ-साथ अमूर्त सम्प्रत्ययों (Abstract concepts) का निर्माण भी होता है। 15 वर्ष की आयु तक किशोर-किशोरियों की रुचियों में परिवर्तन होता रहता है परन्तु 16-18 वर्ष की आयु के बीच उनमें स्थायित्व आ जाता है।

14

स्विस मनोवैज्ञानिक पियाजे (Piaget) ने किशोरों के संज्ञानात्मक विकास के अध्ययन में पाया कि 11 वर्ष की आयु के बाद बच्चों में चिन्तन एवं तर्क की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत बहुत अधिक हो जाती है, उनमें समस्या-समाधान की क्षमता में तीव्र गति से विकास होता है और वे मूर्त के साथ-साथ अमूर्त समस्याओं को भी समझने लगते हैं। 12 वर्ष की आयु तक बच्चे प्रत्यावर्तन (Reversibility) की धारणा को ग्रहण करने लगते हैं और उनमें अमूर्त सम्प्रत्यय जैसे- आत्म सम्प्रत्यय (Self-Concept) का निर्माण होने लगता है। इस आयु वर्ग के किशोर बच्चे अभिसारी (Convergent) और अपसारी (Divergent) चिंतन भी करने लगते हैं।

चिंतन में औपचारिक संक्रियाएं :- इस अवस्था में बालक में चिंतन शक्ति विकसित हो जाती है। वह किसी अमूर्त विषय अथवा घटना पर चिंतन करने में सक्षम हो जाता है। उसके ~~क्रमबद्धता~~ चिंतन में क्रमबद्धता आ जाती है जिसकी सहायता से वह आलोचना एवं व्याख्या करने में सक्षम होता है।

एकाग्रचितता :- इस अवस्था में किशोरों में एकाग्रचितता के लक्षण परिलक्षित होती है। वह अधिक समय तक किसी विषय-विशेष पर ध्यान केन्द्रित कर पाने में सक्षम हो जाते हैं।

नैतिकता की समझ :- किशोरावस्था के मानसिक विकास की एक विशेषता यह भी है इस अवस्था में किशोरों में नैतिक मूल्यों का विकास हो जाता है। वह उचित-अनुचित में अन्तर करना सीख जाते हैं जिससे वह मूल्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में सक्षम होते हैं।

बुद्धि का अधिकतम उपयोग :- किशोरावस्था तक किशोर एवं किशोरियों की बुद्धि का भी अधिकतम विकास हो जाता है। उनमें बौद्धिक शक्ति विकसित हो जाती है। ~~प्रत्येक बात को तर्क के साथ स्पष्ट करने का प्रयत्न करता है~~ तथा जिसके माध्यम से, वह समाज में अपना एक स्थान बनाने में सक्षम होता है।

तर्क शक्ति का विकास :- किशोरावस्था में बालक की तार्किक शक्ति विकसित हो जाती है। वह प्रत्येक बात को तर्क के साथ स्पष्ट करने का प्रयत्न करता है तथा छोटी-छोटी बात पर सदा विवाद के लिए तत्पर रहता है।

स्मृति शक्ति का विकास :- किशोरावस्था तक आते-आते बालक का शब्द भण्डार और अधिक हो जाता है और उनका प्रयोग वह विभिन्न परिस्थिति में अधिक करने लगते हैं। परिणामस्वरूप किशोरों की स्मृति शक्ति और अधिक विकसित होती जाती है।

निर्णय शक्ति का विकास :- इस अवस्था में उनके मानसिक परिपक्वता का स्तर इतना ऊँचा हो जाता है कि वह किसी भी विषय पर सोच विचार कर स्वयं को निर्णय लेने योग्य समझने लगता है। वह वास्तविकता एवं आदर्शों में अन्तर करने लगता है।

समस्या समाधान शक्ति का विकास → तर्क शक्ति के विकास के कारण ही किशोरों में इस अवस्था में समस्या समाधान शक्ति विकसित हो जाता है। इस अवस्था में बालक अमूर्त समस्या पर चिंतन कर तर्क-वितर्क के आधार पर उसका समाधान करते हैं।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास

मनुष्य के सामाजिक विकास से तात्पर्य उसके द्वारा अपने समाज की जीवन शैली को सीखने और अपने समाज में समायोजन करने से होता है। मनुष्य जिस समाज के बीच जन्म लेता है और जिस समाज के बीच रहता है, उसे उस समाज की भाषा, रहन-सहन एवं खान-पान की विधियाँ, रीति-रिवाजों और आचरणों की विधियों को सीखना होता है, बिना इनको सीखे वह उस समाज में समायोजन नहीं कर सकता। यह कार्य वह धीरे-धीरे सीखता है, इसे ही मानव का सामाजिक विकास कहते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने लम्बे अध्ययनों के बाद यह पाया कि मनुष्य का सामाजिक विकास उसके शारीरिक, मानसिक, और उसके संवेगात्मक विकास पर निर्भर करता है, जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, समाज की भाषा एवं रीति-रिवाज आदि को सीखता जाता है और समाज में समायोजन करता जाता है। मनुष्य दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करता है और उसके व्यवहार से प्रभावित होता है। इस परस्पर व्यवहार के व्यवस्थापन पर ही सामाजिक सम्बन्ध निर्भर होते हैं। इस परस्पर व्यवहार में रुचियों, अभिवृत्तियों, आदतों आदि का बड़ा महत्व है। सामाजिक विकास में इन सभी का विकास सम्मिलित है।

मैत्री भाव का विकास :- किशोरावस्था में किशोरों में अपने मित्र समूह के प्रति मैत्री भाव की प्रधानता होती है। पूर्व बाल्यावस्था तक यह भावना बालक की बालक के प्रति तथा बालिकाओं की बालिकाओं के प्रति ही होती थी, परन्तु किशोरावस्था में परस्पर विपरीत लिंग के लिए आकर्षण उत्पन्न हो जाता है और वे एक दूसरे के सामने स्वयं को सर्वोत्तम रूप में उपस्थित करने का प्रयत्न करने लगते हैं।

समूहों के प्रति भक्ति भावना :- किशोर जिस ~~अवस्था~~ समूह में रहता है उसमें उस समूह के प्रति भक्ति भाव होता है। वह उस समूह द्वारा स्वीकृत विचारों, व्यवहारों आदि को ही उचित समझता है और उसी का आचरण करता है। सामान्यतः देखा जाता है कि इस प्रकार के समूह के सभी व्यक्तियों के आचार-विचार, व्यवहार आदि लगभग समान ही होते हैं।

सामाजिक कार्यों में अधिक सहभागिता :- किशोरावस्था में व्यक्ति सामाजिक कार्यों में अधिक भाग लेने लगता है। परिणामतः उसकी सामाजिक समझ में वृद्धि होती है। व्यक्ति में सामाजिक अन्तर्दृष्टि बढ़ जाती है तथा आत्म विश्वास में भी उन्नति होती है।

संवेग → किसी वस्तु अथवा क्रिया से उत्पन्न मनोभाव को संवेग कहते हैं। जैसे → भय

विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण :→ बालक एवं बालिकाओं में विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण एवं खिंचाव उत्पन्न हो जाता है। इस अवस्था में विपरीत लिंग से दूरी समाप्त हो जाती है। इसी कारण बालक तथा बालिकाएं सौंदर्य श्रृंगार तथा बन-ठनकर रहना चाहते हैं।

समूह में विशिष्ठ स्थान प्राप्त करने की इच्छा :→ किशोरावस्था में बालकों में नेतृत्व की भावना का विकास हो जाता है। वे अपनी योग्यताओं के आधार पर समूह में विशिष्ठ स्थान प्राप्त करते हैं तथा समूह के नेता के रूप में स्वीकार किए जाते हैं।

समाज स्वीकृत कार्यों को महत्व :- किशोरावस्था में बालक एवं बालिकाओं का सामाजिक विकास इस अवस्था तक हो जाता है कि वह स्वयं को सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों के अनुरूप व्यवस्थित करने का प्रयत्न करने लगते हैं। वह कोई भी ऐसा कार्य करने को इच्छुक नहीं होते जो समाज विरोधी हो।

व्यवसायिक रुचि का विकास :- किशोर सदा अपने भावी व्यवसाय के लिए चिंतित रहते हैं। किशोर अधिकतर उन्हीं व्यवसायों को चुनना पसंद करते हैं जिनका समाज में सम्मान हो।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास

इस अवस्था में किशोर-किशोरियाँ बहुत संवेदनशील होते हैं। उनमें भय, प्रेम, चिन्ता क्रोध, ईर्ष्या एवं आक्रोश के संवेग बहुत तीव्र होते हैं, उनमें आत्मसम्मान की भावना बड़ी प्रबल होती है और वे अपने समूह में अपनी स्थिति (Status) के प्रति सचेत होते हैं। किशोरों में शारीरिक सौष्ठव (बनाव, उभार / Charm) और किशोरियों में शारीरिक सौन्दर्य प्रदर्शन की प्रवृति होती है। सामान्यतः किशोर साहसिक कार्यों और किशोरियाँ कलात्मक कार्यों को झुके होते हैं। इस अवस्था में किशोर-किशोरियाँ भविष्य के प्रति चिन्तित रहते हैं। उनकी चिन्ता के विषयों में तीन विषय अधिक सघन होते हैं - एक जीवन साथी, दूसरा व्यवसाय, तीसरा समाज में स्थान। इन चिंताओं के कारण वे आशा और निराशा के बीच झूलते रहते हैं और उनमें संवेगात्मक तनाव रहता है।

मनोवैज्ञानिक मैक्डूगल ने स्पष्ट किया कि मनुष्य के सभी मूल-प्रवृत्यात्मक व्यवहारों के पीछे कोई न कोई संवेग छिपा होता है। जैसे- पलायन के पीछे भय, जिज्ञासा के पीछे आश्चर्य परन्तु सभी भाव संवेग नहीं होते। मनोवैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया कि जैसे-2 मनुष्य का शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है जाता है वैसे- वैसे उसमें संवेगों का विकास भी होता जाता है। मनुष्य में संवेगों के विकास को ही संवेगात्मक विकास कहते हैं।

संवेगों के विकास के संदर्भ में दो मत हैं।

① **संवेग जन्मजात होते हैं** – इस मत को मानने वालों में पेकविन तथा हॉलिंगवर्थ आदि। हॉलिंगवर्थ का मानना है कि प्राथमिक संवेग जन्मजात होते हैं। वाटसन ने बताया कि जन्म के समय बच्चे में तीन प्राथमिक संवेग – भय, क्रोध व प्रेम होते हैं।

② **संवेग अर्जित किये जाते हैं** – कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि संवेग विकास एवं वृद्धि की प्रक्रिया के दौरान प्राप्त किए जाते हैं। जन्म के समय संवेग निश्चित रूप से विद्यमान नहीं होते हैं।

किशोरावस्था में बालक एवं बालिकाओं में सांवेगिक विकास भी तीव्रता से होता है जिसके कारण उनमें अनेक संवेगात्मक परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं। जो निम्न हैं-

आत्म सम्मान के प्रति सचेष्ठा ÷ किशोरावस्था में बालक भावना प्रधान हो जाते हैं। उनमें आत्म सम्मान की भावना अधिक जाग्रत हो जाती है। छोटी सी छोटी बात उनके आत्म सम्मान को ठेस पहुँचाती है जिसके कारण उनमें क्रोध, ईर्ष्या, घृणा जैसे संवेग उत्पन्न हो जाते हैं।

जिज्ञासा प्रवृत्ति की प्रबलता ÷ इस आयु में बालकों में जिज्ञासा प्रवृत्ति इतनी अधिक होती है कि वह प्रति पल कुछ नया जानने को उत्सुक रहते हैं। वह सिर्फ क्या है से संतुष्ट नहीं होते बल्कि क्यों है और किस प्रकार है का उत्तर चाहिए होता है।

संवेगों की अभिव्यक्ति में स्थिरता ÷ किशोरावस्था में किशोरों एवं किशोरियों के सामान्य संवेगों जैसे – क्रोध, भय, प्रेम, दया आदि में चंचलता समाप्त होकर स्थिरता आ जाती है।

क्रियाशीलता एवं सक्रियता ÷ इस अवस्था में क्रियाशीलता एवं सक्रियता की प्रवृत्ति अधिक होती है। बालक बाहर के खेलों में तथा बालिकाएँ घर के कामों में अधिक सक्रिय रहती हैं। वे इनके माध्यम से अपने संवेगों को भी अभिव्यक्त करते हैं।

काल्पनिक जीवन पर विश्वास ÷ किशोरों का जीवन कल्पनाओं से परिपूर्ण होता है और अपनी इन कल्पनाओं का साकार रूप वह अपने स्वप्नों में देखने लगते हैं। वह वास्तविक जीवन की अपेक्षा काल्पनिक जीवन में अधिक रहने लगते हैं।

किशोरावस्था और भाषायी विकास

(1) किशोरावस्था में बच्चों में शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता आती है और साथ ही उनका सामाजिक क्षेत्र बढ़ जाता है जिसके परिणामस्वरूप उनके शब्द भण्डार में और तेजी से वृद्धि होती है। (2) इस अवस्था में बच्चे शब्दों में भेद करने लगते हैं ~~जैसे~~ समानार्थी शब्दों और पर्यायवाची शब्दों में भेद करने लगते हैं। (3) इस अवस्था में वे भाषा के व्याकरण को भी समझने लगते हैं और व्याकरण सम्मत वाक्यों की रचना करने लगते हैं, पर तभी जब उन्हें इस सबकी शिक्षा दी जाए।

(4) इस अवस्था में बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति में स्पष्टता आने लगती है, (5) किशोरावस्था में बच्चे अपनी बात को तर्कपूर्ण ढंग से उचित भाषा के माध्यम से प्रकट करने लगते हैं (6) मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ उनकी लिखित अभिव्यक्ति में भी स्पष्टता आने लगती है और वे वर्णनात्मक निबन्ध लिखने लगते हैं (7) कुछ किशोर-किशोरियाँ तो छोटी-छोटी कहानी और कविताओं की रचना भी करने लगते हैं (8) जिन बच्चों को जितना उच्च भाषायी पर्यावरण मिलता है और जिन्हें भाषा शिक्षा की जितनी अधिक अच्छी व्यवस्था होती है उनकी भाषा में उतना ही अधिक निखार आता है।

किशोरावस्था में शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

Factors affecting Physical development in adolescence.

(1) किशोर की शारीरिक रचना एवं स्वास्थ्य अपने माता-पिता से प्रभावित होता है। समान्यत: स्वस्थ माता-पिता के बच्चों का स्वास्थ्य भी स्वस्थ ही होता है।

(2) स्वस्थ शारीरिक विकास के लिए दिनचर्या की नियमितता भी आवश्यक है। यदि बालक सोने, खाने, खेलने, पढ़ने, जैसे अपने सभी कार्य नियमित रूप से तथा निश्चित समयानुसार करे तो इसका उसके शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा वे समान्यत: स्वस्थ रहते हैं।

(3) शरीर की स्वच्छता के लिए पूर्ण निद्रा एवं विश्राम भी आवश्यक है। किशोरावस्था में कम से कम 8 घंटे की नींद लेना अत्यंत आवश्यक है ताकि उसकी थकान दूर हो सके।

(4) किशोरावस्था अत्यंत तनाव एवं संघर्ष की अवस्था होता है। अत: इस स्थिति में माता-पिता का स्नेहपूर्ण व्यवहार तथा शिक्षकों की सहानुभूति एवं सहयोग उनके शारीरिक विकास में सहयोग देता है।

(5) इस अवस्था में बालक पूर्णतः परिपक्व होता है। अतः उस पर उसके परिवार की स्थिति का भी प्रभाव पड़ता है। परिवार की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति भी उसके विकास को प्रभावित करती है।

किशोरावस्था में मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

किशोरावस्था में बालक का मस्तिष्क अत्यंत उथल-पुथल की स्थिति में होता है। इस अवस्था में बालक के अनेक प्रकार के विचारों में उलझा होता है जिसका प्रभाव उसके मानसिक विकास पर निश्चित रूप में पड़ता है।
किशोरों के मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं –

(1) किशोर के मानसिक विकास पर उसके वंशानुक्रम का प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। अधिकतर यही दृष्टिगत होता है कि बुद्धिमान माता-पिता की संतान बुद्धिमान तथा जड़ बुद्धि माता-पिता की संतान जड़ होती है।

(2) किशोर के मानसिक विकास को उसका पारिवारिक वातावरण भी प्रभावित करता है। यदि परिवार का वातावरण सुखद एवं तनावमुक्त है तो बालक का मानसिक विकास उत्तम रूप से होगा और विपरीत यदि उसके परिवार का वातावरण कलह-क्लेश से युक्त हो तो अक्सर बालक का मस्तिष्क गलत दिशा की ओर अग्रसर हो जाता है न केवल परिवार के वातावरण का बल्कि उसका सामाजिक वातावरण भी उसे प्रभावित करता है। वह जिस तरह के वातावरण में रहता है उसी तरह से उसका बौद्धिक विकास होता है। चूंकि किशोरावस्था परिपक्वता की अवस्था होती है इसलिए किशोर अपने मित्र समूह का चयन बहुत सोच विचार कर करता है।

(3) परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति भी किशोर के मानसिक विकास में सहयोग देती है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले परिवार से आने वाले किशोरों का मानसिक विकास निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवार से आने वाले बालकों की अपेक्षा अधिक होता है।

(4) किशोर के मानसिक विकास में विद्यालय एक महत्वपूर्ण कारक है। विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा के द्वारा ही बालक के बौद्धिक विकास को उचित दिशा मिलती है। यही कारण है कि आज की शिक्षा व्यवस्था में किशोर का पाठ्यक्रम उनकी रुचि एवं योग्यतानुसार रखा जाता है ताकि प्रत्येक बालक अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार विकसित हो सकें।

(3) बालक के मानसिक विकास को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक उसका शारीरिक स्वास्थ्य है। जैसा कि अरस्तु द्वारा कथित यह कथन है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। अतः बालक का मानसिक विकास काफी हद तक उसके स्वास्थ्य पर निर्भर करता है।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

(1) किशोर के सामाजिक विकास पर कुछ सीमा तक उसके वंशानुक्रम का भी प्रभाव पड़ता है।

(2) किशोर का शारीरिक एवं मानसिक विकास भी उसके सामाजिक विकास को प्रभावित करती है। क्योंकि समाज में हर तरह के लोग मिलते हैं, उनसे समायोजन तभी स्थापित हो सकता है जब हम अपने क्रोध, भय, ईर्ष्या, द्वेष जैसे संवेगों को नियंत्रित एवं व्यवहार प्रदर्शित करें।

(3) किशोर के सामाजिक विकास को उसकी संवेगिक परिपक्वता भी प्रभावित करती है क्योंकि समाज में हर तरह के लोग मिलते हैं, उनसे समायोजन तभी स्थापित हो सकता है जब हम अपने क्रोध, भय, ईर्ष्या, द्वेष जैसे संवेगों को नियंत्रित एवं व्यवहार प्रदर्शित करें।

(4) परिवार की आर्थिक स्थिति भी बालक को अधिक अथवा कम सामाजिक बनाने में सहायक होती है। धनी परिवार के किशोर के रहने का स्थान तथा वहाँ का वातावरण निर्धन परिवार की अपेक्षा अधिक स्वच्छ होता है। उनके घर में सभी साधन उपलब्ध होते हैं। जो किशोर में उचित सामाजिक गुणों के विकास में सहायक होते हैं।

(5) विद्यालय का वातावरण भी किशोर में सामाजिकता का विकास करने में सहायक होता है। यदि विद्यालय का वातावरण एकतंत्रीय हो तो बालक का सामाजिक विकास स्वस्थ रूप में उचित दिशा में नहीं होगा तथा इसके विपरीत विद्यालय के लोकतंत्रीय वातावरण में बालक स्वतंत्रतापूर्वक पूर्ण कुशलता के साथ अपने मित्रों एवं शिक्षकों के साथ व्यवहार करता है जो उसके सामाजिकरण का ही एक हिस्सा है।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :→

किशोरावस्था तूफानों एवं प्रतिबलों की अवस्था होती है। इस अवस्था में किशोर के लिए समाज में अपनी परिस्थिति निश्चित करना बहुत कठिन होता है क्योंकि वह यह निश्चित नहीं कर पाता कि किस प्रकार का व्यवहार अपेक्षित है। फलतः उसमें सांवेगिक अस्थिरता का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। अतः किशोरावस्था में किशोर में उचित संवेगात्मक विकास होना अत्यंत आवश्यक है। किशोर के संवेगात्मक विकास को अनेक कारक प्रभावित करते हैं जो इस प्रकार हैं –

① बालक के संवेगात्मक व्यवहार को थकान अत्यधिक प्रभावित करती है। थकान के कारण वह क्रोध, चिड़चिड़ेपन जैसे अवांछित संवेग अभिव्यक्त करने लगता है।

② शारीरिक स्वस्थता भी उसके संवेगात्मक विकास को उचित दिशा प्रदान करती है। किशोर यदि शारीरिक रूप से स्वस्थ होगा तो वह किसी भी कार्य को पूर्ण उत्साह, लगन एवं प्रसन्नतापूर्वक करने का प्रयत्न करता है अतः बालक के स्वास्थ्य की दिशा का उसके संवेगात्मक व्यवहार से घनिष्ठ सम्बंध होता है।

③ किशोर के संवेगात्मक व्यवहार को न केवल स्वास्थ्य बल्कि मानसिक योग्यता भी प्रभावित करती है। अधिक मानसिक एवं बौद्धिक योग्यता एवं क्षमता वाले बालकों का संवेगात्मक क्षेत्र अधिक विस्तृत होता है।

④ किशोर का सांवेगिक व्यवहार उसके परिवार, वहाँ के वातावरण, परिवार की स्थिति आदि से बहुत अधिक प्रभावित होता है क्योंकि यदि परिवार का वातावरण आनंदमय एवं शांतिपूर्ण है तो बालक में भी स्वस्थ संवेगों का संचरण होगा। इसके विपरीत यदि परिवार में कलह-क्लेश, लड़ाई-झगड़े का वातावरण उसके सांवेगिक पक्ष पर नकारात्मक प्रभाव डालता है तथा उसकी संवेगात्मक नकारात्मकता उसके सामाजिक व्यवहार को भी प्रभावित करती है।

⑤ यदि परिवार में माता-पिता का किशोर के प्रति दृष्टिकोण सहयोगी एवं सहानुभूति पूर्ण है तथा उनके परस्पर सम्बंधों में मधुरता है तो बालक में संवेगों का विकास सकारात्मक रूप में होता है।

किशोरावस्था की मुख्य विशेषताएँ

किशोरावस्था में लड़के - लड़कियों में उनके शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास की दृष्टि से निम्न विशेषताएँ होती हैं—

1. शारीरिक परिवर्तन एवं यौन विकास (Bodily changes and sex development)
2. बुद्धि एवं मानसिक शक्तियों का विकास (Development of Intelligence & Mental Ability)
3. इच्छाओं, आकांक्षाओं और कल्पनाओं का बाहुल्य (Abundance of Aspirations, Ambitions & Imaginations)
4. रुचियों में स्थायित्व (Stability in interests)
5. आत्मसम्मान की भावना और स्थिति की आकांक्षा (Feeling of Self Respect & Desire for Status)
6. बुरी आदतों और अच्छी-बुरी प्रवृत्तियों का विकास (Development of Good & Bad Habits & good & bad tendencies)
7. मानसिक स्वतन्त्रता और आत्म निर्भरता (Mental independence & Self support)
8. भविष्य की चिन्ता (Future Anxiety)
9. संवेगात्मक अस्थिरता (Emotional Instability)
10. समूह का महत्व (Importance of Group)
11. स्थायी मित्रता (Stable friendship)
12. समायोजन की समस्या (Problem of Adjustment)
13. समाज सेवा की भावना (Feeling of Social Service)
14. वीर पूजा (Hero worship)
15. नैतिक - अनैतिक विकास - (Moral - Immoral development)

किशोरों की समस्याएँ एवं उनके समाधान
Problems of Adolescents & their Remedies

किशोरावस्था में प्रवेश पाते ही बालक को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि यह मनुष्य के जीवन की सबसे कठिन अवस्था है। किशोरावस्था बड़ी नाजुक अवस्था है। यौन सम्बंधी मूल प्रवृत्ति के उदय से तो उनमें एक अजीब हलचल पैदा हो जाती है, एक तूफान सा आ जाता है। स्टैनलेहॉल के अनुसार किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तूफान, तनाव एवं विरोध की अवस्था है।

किशोरावस्था समस्याओं की ~~आवश्यकता~~ अवस्था है। यू. भिन्न-भिन्न किशोर-किशोरियों की भिन्न-भिन्न समस्याएँ होती हैं परन्तु कुछ समस्याएँ समान होती हैं और यदि इनकी इन समस्याओं का तत्काल समाधान न किया जाए तो उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है और व्यवहार भी अन्यथा हो जाता है। ~~[illegible]~~ यहाँ किशोर-किशोरियों की कुछ मुख्य समस्याओं तथा उनके समाधान के उपाय निम्नलिखित हैं।

desires wish fulfillment
the problem of meeting needs & wants

1. आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति की समस्या → किशोरावस्था में किशोर-किशोरियों की आवश्यकताओं में तेजी से वृद्धि होती है, जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं उनकी आवश्यकताएँ बढ़ती जाती हैं। घर से वे अच्छे भोजन, वस्त्र एवं अन्य प्रसाधनों की माँग करते हैं और विद्यालयों में अध्ययन एवं खेल सुविधाओं की माँग करते हैं। माँगों के साथ साथ इनकी इच्छाएँ भी बढ़ती जाती हैं और इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती है। वे वह सब प्राप्त करना चाहते हैं जो उन्हें प्राप्त नहीं होता। आवश्यकताएँ एवं इच्छाएँ पूरी न होने पर उनमें हीनता की भावना पैदा हो जाती है जो उनके व्यवहार को नकारात्मक बना देती है।

इस समस्या के समाधान का एक ही उपाय है कि परिवार में अभिभावक और विद्यालयों में प्रधानाचार्य एवं शिक्षक उनकी सही माँगों की पूर्ति करें और जो माँगे गलत हों उनके विषय में उन्हें उनके गलत होने का बोध कराएं और जिन सही माँगों की पूर्ति न कर पाएँ उनके विषय में अपनी विवशताओं से अवगत कराएं उन्हें सन्तुष्ट करें। इच्छाओं एवं आकांक्षाओं की तो कोई सीमा ही नहीं होती, उनकी पूर्ति तो असम्भव होती है।

the problem of getting out of control

2. नियन्त्रण से छुटकारे की समस्या :- इस अवस्था में किशोर-किशोरियाँ पूर्ण स्वतन्त्र रहना चाहते हैं, वे परिवार, विद्यालय एवं समाज किसी के भी नियंत्रण से मुक्ति चाहते हैं। अभिभावकों और शिक्षकों के सामने यह समस्या होती है कि यदि वे उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता देते हैं तो उनके गलत रास्ते पर जाने की सम्भावना बढ़ जाती है। यदि वे उन पर नियंत्रण करते हैं तो उनके विद्रोह करने की सम्भावना बढ़ जाती है।

मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण व्यवहार ही इस समस्या के समाधान का एक मात्र उपाय है। मनोवैज्ञानिकों का कथन है - 'नियंत्रण करो पर प्यार से'। यह भी आवश्यक है कि किशोरों पर अनावश्यक नियन्त्रण न रखा जाए, उन्हें अपना जीवन अपने तरीके से जीने की स्वतंत्रता दी जाए, पर सामाजिक मानदण्डों के अनुकूल।

Sexual Problems

3. यौन समस्या → किशोरावस्था में काम की मूल प्रवृत्ति का विकास तेजी से होता है। भारत में लड़कियों में 13-15 वर्ष की आयु और लड़कों में 15-18 वर्ष की आयु तक इसका पूर्ण विकास हो जाता है। इसके उदय से किशोर-किशोरियों के शरीर और मन में एक अजीब हलचल पैदा हो जाती है। विषमलिंगी आकर्षण बढ़ जाता है और दिवा स्वप्न में वृद्धि हो जाती है। उनमें प्रायः यौन सम्बंधी बुरी आदतें पड़ (जाती हैं)।

day dreaming
Cast to Spath (जनन के लड़के)

मनोवैज्ञानिकों ने इस समस्या के समाधान के तीन उपाय बताये हैं - एक यौन शिक्षा, दूसरा रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था, तीसरा अनुकूल पर्यावरण।

यौन शिक्षा से उनका तात्पर्य किशोर - किशोरियों को यौन सम्बंधी सामान्य जानकारी और यौन रक्षा से होने वाले लाभ एवं उसके दुरुपयोग से होने वाली हानियों की जानकारी देने से है। रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था से उनका तात्पर्य किशोर - किशोरियों को उत्पादक कार्यों में व्यस्त रखने से है। और अनुकूल पर्यावरण से उनका तात्पर्य परिवार, विद्यालय, एवं समाज, सभी जगह काम उत्तेजक परिस्थितियों की समाप्ति और काम की मूल प्रवृत्ति के बारे में जानकारी देना।

4. समायोजन की समस्या → Adjustment problem
5. आत्मसम्मान एवं स्तर की समस्या Self esteem and Status problems
6. भविष्य की चिन्ता की समस्या worrying about the future
7. नैतिक विकास की समस्या The problem of moral Development

किशोरों का निर्देशन एवं परामर्श
Guidance and Counselling of Adolescents

निर्देशन का अर्थ → निर्देशन का सामान्य अर्थ है कि एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को उसके कार्य सम्पादन का सही तरीका बताना जैसे - माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को किसी कार्य सम्पादन के समय यह बताना कि इस कार्य को ऐसे करो। मनोविज्ञान में निर्देशन का अर्थ - किसी व्यक्ति को उसकी अपनी समस्या को हल करने हेतु उसकी अपनी क्षमता एवं योग्यता का ज्ञान कराने एवं उसे समस्या के हल करने के लिए तैयार करने से होता है। समस्या का हल तो वह स्वयं करता है।

हौलरिन्स → निर्देशन का अर्थ व्यक्ति को उसकी शक्तियों का ज्ञान इस प्रकार कराने से है कि वह अपनी शक्तियों को पहचानने और उनके द्वारा समस्या का हल करे।

निर्देशन एक ऐसी ~~समस्या~~ प्रक्रिया है जिसमें निर्देशक व्यक्ति विशेष को उसकी अपनी समस्या से सम्बन्धित क्षमता एवं योग्यता का ज्ञान कराता है और उसे अपनी इस क्षमता एवं योग्यता से अपनी समस्या को हल करने के लिए तैयार रहता है। समस्या का हल तो फिर स्वयं करता है।

चिसलम → निर्देशन किसी व्यक्ति को अपने गुण मालूम करने तथा अपना स्थान खोजने में सहायता करने की प्रक्रिया है।

30 Monday

किशोरावस्था के विकास के सिद्धान्त :→

किशोरावस्था में परिवर्तन से सम्बंधित दो सिद्धान्त प्रचलित है। जो इस प्रकार है।

(1) त्वरित / आकस्मिक विकास का सिद्धान्त :- प्रवर्तक - स्टेनली हाल (Emergent Development)
इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था में विकास अकस्मात होता है। इस सिद्धान्त के प्रतिपादक स्टेनली हाल है। उनके अनुसार किशोरावस्था के परिवर्तन का सम्बन्ध न तो शैशवावस्था से होता है और न बाल्यावस्था से। इस प्रकार किशोरावस्था को एक नया जन्म कहा जा सकता है। इस अवस्था में बालक में जो परिवर्तन आते है, वे आकस्मिक होते है।

(2) क्रमिक / क्रमश विकास का सिद्धान्त :- प्रवर्तक - थार्नडाइक व हालिंगवर्थ (gradual / Sequential)
इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था में विकास ~~अकस्मात~~ धीरे-धीरे अर्थात क्रमानुसार होता है। इसमें परिवर्तन अचानक न होकर क्रमश होते है। किंग का एक मत है - "जिस प्रकार एक ऋतु का आगमन दूसरी ऋतु के पश्चात् होती है, परन्तु पहली ऋतु में दूसरी ऋतु के आने के लक्षण प्रतीत होने लगते है, उसी प्रकार बालक की अवस्थाएँ भी एक दूसरे से सम्बन्धित होती है।"

किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताएँ :-

किशोरावस्था में विकास सम्बंधी लक्षण :→ / विशेषताएं / कार्य

(1) चहुमुखी विकास अर्थात शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व संवेगात्मक विकास
(2) बुद्धि का अधिकतम विकास
(3) कल्पना का बाहुल्य
(4) वीर पूजा / नायक पूजा प्रवृत्ति (Hero worship trend / tendency)
(5) समायोजन का अभाव
(6) पीढ़ियों में अन्तर के कारण विचारों में मतभेद → कोल & ब्रूस
(7) अपराध प्रवृत्ति का विकास
(8) समाज सेवा व देश भक्ति की भावना
(9) विचारों व संवेगों में परिपक्वता
(10) संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से
(11) समवयस्क समूह भावना (Peer Group)
(12) समलिंगीय व विषमलिंगीय भावना
(13) नेतृत्व का विकास
(14) स्व पहचान
(15) व्यक्तिगत व घनिष्ठ मित्रता
(16) दिवास्वप्न की प्रवृत्ति
(17) आत्म सम्मान की महत्व
(18) मानसिक स्वतंत्रता व विद्रोह की स्थिति
(19) स्वतंत्र सोच का विकास
(20) स्वतंत्र निर्णय क्षमता
(21) अपनों से बिछड़ने का गम
(22) सामाजिक स्वीकृति की भावना
(23) आत्म चेतना की भावना
(24) आत्म सम्प्रत्यय की भावना (अपने बारे में धारणा)
(25) आत्म निर्भर बनने की इच्छा
(26) अमूर्त चिंतन की योग्यता

किशोरों के आवश्यकताएँ एवं आकांक्षाएँ :-

किशोरावस्था में किशोरों एवं किशोरियों की आवश्यकताएं एवं आकांक्षाएं निम्नलिखित होती हैं।

(1) शरीर को पुष्ट करने की आवश्यकता → किशोरावस्था में बहुत तेजी से शारीरिक परिवर्तन होते है इसलिए किशोर अपने शरीर पर विशेष ध्यान देता है। उसकी स्वाभाविक इच्छा होती है कि उसकी शरीर मजबूत और पुष्ट हो। इसके लिए वह पौष्टिक भोजन करना चाहता है और नियमित व्यायाम का अभ्यास करता है अपने मजबूत शरीर को देखकर किशोर और किशोरियों को बहुत ज्यादा प्रसन्नता होती है।

(2) शारीरिक सौष्ठव की आकांक्षा → प्रत्येक किशोर और किशोरी का ध्यान अपनी शारीरिक सुन्दरता पर होती है। शारीरिक सुन्दरता को बढ़ाने के लिए वह स्नान, वस्त्र सजावट आदि पर विशेष ध्यान देता है। स्वयं को सुन्दर दिखाने के लिए वह बराबर प्रयत्नशील होता है। किशोरियाँ अपने बनाव-श्रृंगार के प्रति बहुत सतर्क होती हैं नये-नये फैशन के अनुसार अपने को सुन्दर बनाती हैं।

(3) शारीरिक प्रदर्शन की आवश्यकता
(4) खेल-कूद में भाग लेने की आकांक्षा
(5) आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता
(6) नियन्त्रण मुक्त होने की आकांक्षा
(7) किसी को आदर्श बनाने की आकांक्षा
(8) भ्रमण की आकांक्षा
(9) कुछ बनने की आकांक्षा
(10) विषमलिंगी से प्रेम की आकांक्षा
(11) सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने की आकांक्षा
(12) यौन शिक्षा की आवश्यकता
(13) आत्माभिमान की आकांक्षा
(14) मनोवैज्ञानिक आवश्यकता
(15) सामाजिक आवश्यकता